परमेश्वर का प्रेम

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

परमेश्वर का प्रेम क्या है, और यह हमारे लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

परमेश्वर के प्रेम को सही रूप से समझने के लिए, पहले यह जानना आवश्यक है कि बाइबल और हमारे दैनिक जीवन में प्रेम के कौन-कौन से रूप दिखाई देते हैं। शास्त्र और मानव अनुभव तीन मुख्य प्रकार के प्रेम की ओर संकेत करते हैं—एरोस, फीलियो और अगापे।

1. एरोस – वैवाहिक, भावनात्मक प्रेम

एरोस वह प्रेम है जो भावनाओं, आकर्षण और वैवाहिक निकटता से उत्पन्न होता है। यह पति और पत्नी के बीच पाया जाने वाला प्रेम है—प्राकृतिक, सुंदर और परमेश्वर द्वारा निर्मित।

सुलैमान अपनी दुल्हन के प्रति अपने प्रेम को श्रेष्ठगीत में बड़े काव्यात्मक ढंग से व्यक्त करता है:

श्रेष्ठगीत 1:13–17 (ERV-Hindi)

“मेरा प्रिय मेरे वक्ष के बीच में मेरे लिये गन्धरस की सुगन्धी थैली सा है।
मेरा प्रिय मेरे लिये एन-गेदी की द्राक्ष की बारी में हनेस

परमेश्वर का प्रेम

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

फूलों की लाली सा है।
हे मेरी प्रियतमा, तुम बड़ी सुन्दर हो! तुम्हारी आँखें
कपोतों सी हैं।
हे मेरे प्रिय, तुम सुन्दर हो, हाँ, मनोहर हो!
हमारा पलंग हरा-भरा है। हमारे घर की कड़ियाँ देवदार की हैं
और हमारी छत की बलियाँ सनोवर की हैं।”

एरोस परमेश्वर की विवाह को लेकर बनाई गई दिव्य योजना का हिस्सा है (उत्पत्ति 2:24)। लेकिन यह एक सीमा तक ही चलता है—यह भावनाओं और आकर्षण पर निर्भर करता है, इसलिए परिस्थितियों के बदलने पर यह बदल भी सकता है।

2. फीलियो – मित्रतापूर्ण या पारिवारिक प्रेम

फीलियो वह प्रेम है जो मित्रता, परिवार, सहभागिता या साथ बिताए गए अनुभवों से विकसित होता है। यह वह प्रेम है जो हम अपने भाइयों-बहनों, मित्रों, सहकर्मियों, सहपाठियों या अन्य विश्वासियों के प्रति महसूस करते हैं।

यह प्रेम सकारात्मक होता है, लेकिन अक्सर शर्तों पर आधारित रहता है—यदि परिस्थितियाँ बदल जाएँ, तो यह प्रेम कमजोर भी पड़ सकता है।

परमेश्वर का प्रेम

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

यीशु ने इस प्रेम की सीमाओं को दिखाते हुए कहा:

मत्ती 5:46–48 (ERV-Hindi)

“यदि तुम केवल उनसे प्रेम करो जो तुमसे प्रेम रखते हैं, तो तुम्हें क्या प्रतिफल मिलेगा? क्या चुंगी लेने वाले भी ऐसा
ही नहीं करते?
और यदि तुम केवल अपने भाइयों को नमस्कार करते हो तो तुम कौन सी विशिष्ट बात करते हो? क्या अन्यजाति भी ऐसा नहीं करते? इसलिये तुम सिद्ध बनो जैसे तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है।”

मानवीय प्रेम—चाहे वह कितना भी अच्छा क्यों न हो—पूर्ण नहीं होता। यह सीमित और अक्सर स्वार्थ से प्रभावित होता है। परमेश्वर का प्रेम ही पूर्ण और निर्दोष है।

3. अगापे – परमेश्वर का बिना शर्त, बलिदानी प्रेम

अगापे प्रेम सबसे उच्च, सबसे शुद्ध और सबसे महान प्रेम है। यह बिना शर्त, निस्वार्थ और बलिदानी होता है। यह परिस्थितियों, भावनाओं या सामने वाले व्यक्ति की योग्यता पर निर्भर नहीं करता।

परमेश्वर का प्रेम

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

इस प्रेम में आप उस व्यक्ति से भी प्रेम करते हैं जो आपको अनदेखा करता है, नफरत करता है या आप पर अत्याचार करता है।

यीशु ने इसी अगापे प्रेम का सर्वोच्च उदाहरण दिया—वह हमारे लिए तब मरे जब हम पापी ही थे (रोमियों 5:8)।

पौलुस इस प्रेम के गुणों का इस प्रकार वर्णन करता है:

1 कुरिन्थियों 13:4–8 (ERV-Hindi)

“प्रेम धीरजवन्त और दयालु है। प्रेम न तो ईर्ष्या करता है, न डींग मारता है, न घमण्ड करता है।
यह न बदतमीज़ी करता है, न अपना ही लाभ चाहता है, न चिड़चिड़ा होता है, और न बुराइयों का लेखा रखता है।
अन्याय से प्रेम नहीं रखता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता
है।
प्रेम सब कुछ सह लेता है, सब बातों पर विश्वास करता है, सब बातों की आशा रखता है और सब बातों में स्थिर रहता है।
प्रेम कभी समाप्त नहीं होता।”

अगापे प्रेम परमेश्वर की स्वभाविक पहचान है—क्योंकि “परमेश्वर प्रेम है” (1 यूहन्ना 4:8)।

परमेश्वर का प्रेम

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

परमेश्वर के प्रेम का सबसे बड़ा

प्रमाण

मानवजाति के प्रति परमेश्वर का अगापे प्रेम शास्त्र में सबसे स्पष्ट रूप से इस पद में दिखाई देता है:

यूहन्ना 3:16 (ERV-Hindi)

“परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो बल्कि अनन्त जीवन पाए।”

परमेश्वर पापियों से भी प्रेम करता है। वह नष्ट करना नहीं चाहता—बल्कि बचाना चाहता है। चाहे कोई कितना भी दूर चला गया हो, परमेश्वर का प्रेम उसे क्षमा करने और नया जीवन देने के लिए हमेशा तैयार है।

परमेश्वर का प्रेम

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

व्यावहारिक शिक्षा

अपने हृदय को कठोर न होने दें।
आज ही परमेश्वर के प्रेम को स्वीकार करें। उसके द्वारा दी गई क्षमा और उद्धार को ग्रहण करें।

हम सचमुच अंतिम समयों में जी रहे हैं, और बिना पश्चाताप के पाप में मरना अनन्त विनाश की ओर ले जाता है (लूका 13:3; प्रकाशितवाक्य 21:8)।

निष्कर्ष

परमेश्वर का प्रेम अनोखा है।
यह बिना शर्त, अनन्त, और परिवर्तनकारी है।
यह इस पर निर्भर नहीं कि हम कौन हैं—बल्कि इस पर कि वह कौन है।

शालोम।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP[1]….

परमेश्वर का प्रेम

Share on:
WhatsApp
Endnotes:

1. WHATSAPP GROUP: https://chat.whatsapp.com/L3ysoFZcz058XCX9oLvKL1?s=cl&p=a&mlu=4&ilr=4

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7